

॥ कालिदास रायके लेखा ॥

शुद्धाभाजनेषु,

दादा ॐविजयार प्रणाम नेबेन। एवार कलकतार गिगे गजेनवारुवर मुखे शुनलाम आपनि वारते शय्यागत। कथाटा किछु अतिरञ्जित वलेइ आमार मने हल। देखते वारार इच्छे थारकेलेओ समयाभावे पारिनि। प्रमथ ओ आमि एकइ पाडाय आछि। एखन बेला १०टा। मारुठेर मध्ये एकटा हर्तुकुीतलार छायाय वसे आमरा दुजने वनड्रमणेर मतलव आँटुचि। कतदूर हये ओठे वलते पारि ना।

चिठुठर उतुतरे जानाबेन आपनार शरीर केमन। आपनार कथा खुव मने हय एवंग देखते इच्छे करे।

इति प्रीतिमुक्क

शुीविभूतिभूषण वन्द्यापाध्याय

[कालिदास रायके प्रमथनाथ वीशीर लेखा २४.११.४८ तारिखेर चिठुठर कागजेर शेषे एइ चिठुठि विभूतिभूषण लिखेछिलेन दहिगोडुस्थित शरुववारु वारंगलोते वसे।

—नि.स.]